ebrothers.com, for detailed information on ayurveda books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on ayurveda boo

संस्कृत परिज्ञान

द्वितीय प्रश्न-पत्र

निरूक्ति पर्याय एवं आयुर्वेद का इतिहास

लेखक

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा

डॉ. छविकृष्ण आर्य (शास्त्री)

सहायक

वैद्य मनोज कुमार शर्मा

वैद्य अभिजीत शर्मा

JAYPEE

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	निरूक्ति तथा पर्याय पदानि	1–7
2.	परिभाषा पदानि	8–14
3.	वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम्	15–23
4.	पंचतन्त्र की कथाएँ संक्षिप्त परिचय	24–26
5.	आयुर्वेद का इतिहास	27–60
6.	संहिताओं के प्रणेता, आचार्यगण इनकी रचनाएं काल निर्धारण एवं योगदान	61–89
7.	आयुर्वेद ग्रन्थों के प्रमुख टीकाकार एवं व्याख्याऐं	90–105
8.	लघुत्रयी का स्वरूप, योगदान महत्व एवं व्याख्याकार	106–111
9.	पशु–चिकित्सा एवं वृक्षायुर्वेद	112–118
10.	अशोक, मुगल एवं ब्रिटिश काल में आयुर्वेद की स्थिति	119–125
11.	आधुनिक काल के लेखकों का परिचय	126–130
12.	आयुर्वेद की सार्वभौमिकता	131–142
13.	स्वतन्त्रता के पूर्व एवं पश्चात् आयुर्वेद विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ	143–158
14.	आयुर्वेद के राष्ट्रीय संस्थानों का परिचय	159–165
15.	आयुर्वेद की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएँ	166–171
16.	आयुर्वेद उत्कर्ष में विश्व स्वास्थ्य संगठन की गतिविधियों का परिचय	172–174

अध्याय
3

वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम्

प्रथमोऽध्यायः

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥ (चरक)

आयुर्वेद व्याख्या- हितकर, अहितकर, सुखकर, दुःखकर (रुप) आयु चार प्रकार की होती है। उस आयु का हितकर, अहितकर, सुखकर, दुःखकर स्वरुप क्या होता है? आयु का मान कितना होता है? इन सभी का विवरण जिसमें है वह आयुर्वेद कहलाता है।

कायवाग्बुद्धिविषया ये मलाः समुपस्थिताः।
चिकित्सालक्षणाध्यात्मशास्त्रैस्तेषां विशुद्धयः॥ (वाक्यपदीप)

चिकित्साशास्त्र :- शरीर, भाषा और बुद्धि इन में जो-जो दोष उत्पन्न हुआ करते हैं। उनका शोधन चिकित्साशास्त्र, व्याकरणशास्त्र और अध्यात्मशास्त्र से होता है।

द्वितीयोऽध्यायः

अग्निवेशश्च भेलश्च जतूकर्णः पराशरः।
हारीतः क्षारपाणिश्च जगृहुस्तन्मुनेर्वचः॥ (चरक)

आत्रेय संहिताकर्ता ऋषि- पुनर्वसुने प्राणियों पर दया भाव के लिए पुण्यप्रद आयुर्वेद को अपने छः शिष्यों को दिया तथा उन शिष्यों में अग्निवेश, भेल, जतुकर्ण, पराशर, हारीत और क्षारपाणि ने उनके वचनों को जैसा कहा उसी रूप में ग्रहण करें ।

अष्टांगसंग्रहे ज्ञाते वृथा प्राक्तन्त्रयोः श्रमः।
अष्टांगसंग्रहेऽज्ञाते वृथा प्राक्तन्त्रयोः श्रमः॥

अष्टांगसंग्रह पढ़ने का महत्व :- अष्टांगसंग्रह का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेने पर उससे पहले के सभी आयुर्वेद तन्त्रों (ग्रन्थों) का ज्ञान प्राप्त कर लेने का परिश्रम नहीं करना होता है। वैसे ही यदि अष्टांगसंग्रह का ज्ञान प्राप्त न किया गया तो पूर्वतन्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लेने का व्यर्थ में ही अधिक परिश्रम करना होता है।

JAYPEE BROTHERS

तृतीयोऽध्यायः

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥ (योगवार्तिक)

पतञ्जलि :- योग शास्त्र से जिन्होंने चित्त का, व्याकरण महाभाष्य से भाषा (वाणी) का और वैद्यकशास्त्र से शरीर का मल दूर किया उस पतञ्जलि को मैं अञ्जलिबद्ध प्रणाम करता हूँ।

अत्रिः कृतयुगे वैद्यो, द्वापरे सुश्रुतः स्मृतः।
कलौ वाग्भटनामा च, गरिमाऽत्र प्रदिश्यते॥ (हारीत)

युग-युग के वैद्यक प्रणेता :- कृत में पुनर्वसु आत्रेय, द्वापर में सुश्रुत, कलि काल में वाग्भट आदि का विशेष आयुर्वेद प्रणेताओं का युगानुरूप महत्व बतलाया है।

चतुर्थोऽध्यायः

धर्मार्थं नार्थकामार्थमायुर्वेदो महर्षिभिः।
प्रकाशितो धर्मपरैरिच्छद्भिः स्थानमक्षरम्॥ (चरक)

वैद्यकशास्त्र का उद्देश्य :- स्वर्ग में अक्षयस्थान प्राप्त करने की इच्छा वाले धर्मपरायण महर्षियों ने पृथ्वी पर आयुर्वेद का प्रकाशन धार्मिक भावना से किया है, यश प्राप्ति या धन प्राप्ति की दृष्टि से नहीं किया है।

इह चत्वारि दानानि प्रोक्तानि परमर्षिभिः।
विचार्य नानाशास्त्राणि शर्मणेऽत्र परत्र च॥
भीतेभ्यश्चाभयं देयं, व्याधितेभ्यस्तथौषधम्।
देया विद्यार्थिने विद्या, देयमन्नं क्षुधातुरं॥ (काशीखण्ड)

चतुर्विध दान :- परम महर्षियों ने अनेकों शास्त्रों का विचार करके इहलोक तथा परलोक में सुखप्राप्ति के लिए प्रमुख चार दान बतलाये हैं। भयातुर को अभयदान, रोगी को औषधिदान, विद्यार्थी को विद्यादान और क्षुधातुर (भूखे) को अन्नदान।

सन्ति दानान्यनेकानि किं तैस्तुच्छफलप्रदैः।
अभीदिनानतुल्यं तु परमेकं न विद्यते॥ (काशीखण्ड)

आरोग्यदान की श्रेष्ठता :- शास्त्रों में दान नाना प्रकार के बताये हैं, वे प्रायः सामान्य तुच्छफल देने वाले होते है उनके करने से क्या लाभ है? उनमें अभयदान के समान एक भी दान नहीं (जो सर्वश्रेष्ठ) है।

JAYPEE BROTHERS

पञ्चमोऽध्यायः

सत्त्वं रजस्तम इति मानसाः स्युस्त्रयो गुणाः।
तेषां गुणानां साम्यं यत्तदाहुः स्वस्थलक्षणम्॥ (महाभारत)

मनःस्वास्थ्यलक्षण :- सत्त्व, रजस् और तमस्-ये मन के तीन विशेष गुण होते हैं। इन गुणों की जो साम्यावस्था होती है उनको ही मानसिक स्वास्थ्य कहते हैं।

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥ (सुश्रुत)

शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य लक्षण :- जिसके सत्त्वादिगुण तथा वातादि तीनों दोष सम हो (उदर एवं शरीर की समस्त अग्नियां, रसादिसप्त धातु, (मूत्र पुरीष स्वेदादि की समस्त) क्रियाएँ सम हों तथा जिसकी आत्मा, इन्द्रियाँ तथा मन प्रसन्न हों वह स्वस्थ कहलाता है।

षष्ठोऽध्यायः

तुलभ्रमगुणाकर्षधनुराकर्षणादिभिः।
आयामो विविधोऽङ्गानां व्यायाम इति कीर्तितः॥ (धनुर्वेद)

व्यायामव्युत्पत्ति :- व्यायाम के लिए तुल, मुद्गर तथा उसी प्रकार के (भारी) उपकरणों, घुमाये जाने वाले साधनों) को घुमाना, रस्सा खींचना, धनुष का खैंचना इत्यादि (अनेक विध कामों) से शरीर के विविध अङ्गों का जो आयाम (श्रम) होता है उसे व्यायाम कहते हैं।

शनैरर्थः, शनैः पन्थाः, शनैः पर्वतमारुहेत्।
शनैर्विद्या च धर्मश्च, व्यायामश्च शनैः शनैः॥ (चाणक्यनीतिशास्त्र)

व्यायाम सेवन विधि :- धीरे-धीरे धनोपार्जन करना चाहिए, धीरे-धीरे मार्ग गमन करना चाहिए, पहाड़ों पर धीरे-धीरे चढ़ना चाहिए, धीरे-धीरे विद्या और धर्म का अभ्यास करना चाहिए और धीरे-धीरे ही व्यायाम करना चाहिए।

मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्थानयोग्यं वपुः
सत्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चितं भयक्रोधयोः।
उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले
मिथ्यैव व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग्विनोदः कुतः॥ (शाकुन्तल)

शिकार करने के :- शिकार से चरबी का नाश होने से उदर घटकर शरीर हलका और श्रम योग्य बनता है, जिन प्राणियों की शिकार की जाती है उनके चित्त पर होने वाले भय और क्रोध का प्रभाव भी देखने को मिलता है, चलायमान लक्ष्य पर जब बाण वेध करने में सफल होते हैं तब धनुर्धारियों के लिए वह एक आत्मगौरव की बात होती है कहने का तात्पर्य यह है कि मृगया को व्यर्थ में लोग व्यसन कहते हैं, इससे अधिक मनोविनोद कहीं नहीं है।

JAYPEE BROTHERS

सप्तमोऽध्यायः

वायुस्तन्त्रयन्त्रधरः, प्रवर्तकश्चेष्टानामुच्चावचानां, नियन्ता प्रणेता
च मनसः, सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः, सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा,
आयुषोऽनुवृत्तिप्रत्ययभूतः॥ (चरक)

वायुशरीर रूपी यन्त्र का धारण करने वाला, शरीर की छोटी-बड़ी (समस्त) चेष्टाओं का प्रवर्तक अर्थात् अनचाहे विषयों की ओर जाने वाले, मन का नियन्त्रक और अभीष्ट विषयों की ओर जाने का प्रेरक तथा सभी इन्द्रियों का भी प्रेरक है, सब इन्द्रियार्थों को मन की ओर ले जाने वाला और आयु की निरन्तरता का साक्षी होता है।

यावद् वायुः स्थितो देहे तावज्जीवनमुच्यते।
मरणं तस्य निष्क्रान्तिस्ततो वायुं निरोधयेत्॥ (हठयोगप्रदी.)

जब तक शरीर में वायु (प्राणवायु) है तब तक जीवन है। उसका निकल जाना मृत्यु है, इसलिए उसके नियन्त्रण के लिए सभी प्रकार के अभ्यास करने चाहिए।

यथा सिंहो गजो व्याघ्रो भवेद् वश्यः शनैः शनैः।
तथैव सेवितो वायुरन्यथा हन्ति साधकम्॥ (हठयोगप्रदीपिका)

जैसे सिंह, हाथी, बाघ धीरे-धीरे वश में होते हें (शीघ्र नहीं), वैसे धीरे-धीरे अभ्यास करने पर प्राण (वश में होता) है, शीघ्रता करने पर वह साधक का नाश कर देता है।

अष्टमोऽध्यायः

स्नानं नाम मनःप्रसादजननं दुःस्वप्नविध्वंसनं
शौचस्यायतनं मलापहरणं संवर्धनं तेजसः।
रूपद्योतकरं रितुप्रमंथनं कामाग्निसन्दीपनं
नारीणां च मनोहरं श्रमहरं स्नाने दशैते गुणाः॥ (चाणक्यनीती)

स्नान मन में प्रसन्नता उत्पादक, दुःस्वप्ननाशक, पवित्रका का अधिष्ठान, अपवित्रता का अपहारक, तेजवर्धक, रूपवर्धक, शत्रुनाशक, कामाग्निदीपक, स्त्रियों का मन हरण करने वाला और थकावट दूर करने वाला होता है। स्नान में ये दस गुण होते हैं।

न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि।
न वासोभिः सहाजस्त्रं, नाविज्ञाते जलाशये॥ (मनु)

स्नान निषेध :- भोजन करने पर, रोग पीड़ित होने पर, मध्य रात्रि में, बहुत वस्त्र पहन कर तथा अज्ञात जलाशय में स्नान न करें।

JAYPEE BROTHERS

नवमोऽध्यायः

अभ्दिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति, मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति॥ (मनु)

जल से शरीरगात्र, सत्य से मन, विद्या और तप से भूतात्मा तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध (तथा पवित्र) हो जाते हैं।

मनःशुद्धिश्च विज्ञेया धर्मेणाध्यात्मविद्यया॥ (वसिष्ठसंहिता)

मनःशुद्धि :- मन की शुद्धि धर्म (के अनुसार आचार-विचार आहार-विहार रखने) से तथा आध्यात्मिक विद्या (का अभ्यास करने) से होती है।

दशमोऽध्यायः

पानीयं प्राणिनां प्राणा विश्वमेव च तन्मयम्।
न हि तोयाद्विना वृत्तिः स्वस्थस्य व्याधितस्य वा॥ (अ0संग्रह)

जल का महत्व :- जल जीवसृष्टि का प्राण है, विश्व ही जलमय है, क्या स्वस्थ और क्या रोगी, किसी का जीवन जल के बिना सम्भव नहीं है।

रसान्तराण्येकरसं यथा दिव्यं पयोऽश्नुते।
देशे देशे गुणेष्वेवमवस्थास्त्वमविक्रियः॥ (रघुवंश)

जैसे केवल एक रसयुक्त आन्तरिक्ष जल (पृथ्वी पर गिरने पर) पृथ्वी के प्रत्येक स्थान में भिन्न-भिन्न रसों को प्राप्त होता है वैसे हे भगवन्! तुम अविकार होते हुए गुणों से लिप्त होने पर अनेक अवस्थाओं को प्राप्त होते हो। अर्थात् अनेक स्वरूप में प्राप्त होते हैं।

दिवाः सूर्यांशुसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम्।
कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम्॥
हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं शुचि।
स्नानपानावगाहेषु हितमम्बु यथाऽमृतम्॥ (चरक)

हंसोदक :- जो जल दिन में सूर्य की किरणों से तप्त हुआ, रात में चन्द्रकिरणों से शीतल हुआ, उचित काल में पक्व हुआ, अगस्ति तारे के उदय होने पर उसकी किरणों से निर्विष हुआ वह शरद् ऋतु का निर्मल जल 'हंसोदक' कहलाता है जो स्नान, पान और अवगाहन के लिए अमृतसम हितकर होता है।

एकादशोऽध्याय

अन्नाद् भूतानि जायन्ते, जातान्यन्नेन वर्धन्ते।
अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते॥ (तैत्तिरीयोपनिषद्)

JAYPEE BROTHERS

अन्न निरूक्ति :- अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न से वृद्धि करते हैं। यह प्राणियों द्वारा खाने में प्रयोग किया जाता है तथा यह प्राणियों को भी भक्षण करता है इसलिये उसे अन्न कहा जाता हैं।

अद्यते विधिवद् भुक्तमत्ति भोक्तारमन्यथा।
आयुष्यं स्वास्थ्यपदं पूर्वमन्यथैवेतरत् स्मृतम्।।

अन्न स्वरुप :- यथाविधि सेवन किया हुआ अन्न भोक्ता (प्रयोग करने वाले) के द्वारा भक्षित पाचित होता है, इसके विपरीत अर्थात् अयथाविधि सेवित अन्न भोक्ता को भक्षण करता है। प्रथम दीर्घायुष्यप्रद और स्वास्थ्यकर और द्वितीय प्रकार का अल्पायुष्यकर और अस्वास्थ्यप्रद होता है, ऐसा शास्त्र का मत हैं

द्वादशोऽध्याय

को हि तुलामधिरोहति शुचिना सहजमधुरेण।
तप्तं विकृतं मथितं तथापि यत्स्नेहमुग्दिरति।।

दूध महिमा :- दूध की महिमा में लिखा है-जो तपाने पर, जमाने पर, मथने पर स्नेह अर्थात् मक्खन उत्पन्न करता है अतः उस सहज मधुर, पवित्र दूध की तुलना में कौन बैठ सकता है (अर्थात् बराबरी कर सकता है।)

कैलासे यदि तक्रमस्ति गिरिशः किं नीलकण्ठो भवेद्
वैकुण्ठे यदि कृष्णतामनुभवेदद्यापि किं केशवः।
इन्द्रो दुर्भगतां क्षयं द्विजपतिर्लम्बोदरत्वं गणः
कुष्ठित्वं च कुबेरको दहनतामग्निश्च किं विन्दति।।

तक्र महिमा :- कैलास में यदि तक्र होता तो शंकर जी नीलकण्ठ क्यों बनते अर्थात् तक्र पीकर विष शान्त कर देते। वैकुण्ठ में यदि तक्र होता तो कृष्ण (भगवान विष्णु) काले क्यों बनते? इन्द्र का भग रोग दूर हो जाता, चन्द्रमा का क्षय रोग, गणपति का लम्ब उदर, कुबेर कुष्ठरोग और अग्नि दाहयुक्त होते ही नहीं।

त्रयोदशोऽध्यायः

प्राणाः प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहन्त्यसून्।
विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम्।। (चरक)

युक्तायुक्त भोजन का फल :- अन्न प्राणियों के प्राण हैं अतः युक्तिपूर्वक ग्रहण करना चाहिए अयुक्ति से ग्रहण किया प्राणहर अर्थात् विष बनकर प्राणों का नाश करता है और युक्ति से सेवन करने पर वह रसायन रूप होता है।

आढ्यानां मांसपरमं, मध्यानां गोरसोत्तमम्।
तैलोदरं दरिद्राणां भोजनं भरतर्षभ।। (महाभारत)

हे भरतश्रेष्ठ- धनाढ्यो का भोजन मांस से भरपूर होता है, मध्यमों को दूध एवं दूध के पदार्थ युक्त और दरिद्रों का तैलयुक्त होता है। (यह प्रकृति एवं स्वाभाविक कारण होता है)

JAYPEE BROTHERS

भोजनान्ते च किं पेयं, जयन्तः कस्य वै सुतः।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं, तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्॥

तीन प्रश्न :- भोजन के अन्त में क्या पिया जाय? तक्रम्, जयन्त किसका पुत्र है? इन्द्र का, विष्णुपद कैसा है? दुर्लभ, चौथे चरण का स्वतन्त्र अर्थ यह भी है कि इन्द्र को तक्र दुर्लभ है।

न भुञ्जीतोद्धृतस्नेहं, नातिसौहित्यमाचरेत्।
नातिप्रगेनातिसायं, न सायं प्रातराशितः॥ (मनु)

भोजन विधि :- स्नेहविरहित भोजन न करें, अतिमात्रा में भोजन न करें, प्रातः-संध्या काल और सांय-संध्याकाल में भोजन न करें तथा दोपहर का भोजन (गरिष्ठ या बहुत) अधिक होने पर रात को भोजन न करें।

चतुर्दशोऽध्यायः

सुजीर्णमन्नं, सुविचक्षणः सुतः
सुशासिता स्त्री, नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं, सुविचार्य यत्कृतं
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥ (हितोपदेश)

भली भाँति पचा हुआ अन्न, बहुत चतुर पुत्र, अच्छी प्रकार अनुशासित पत्नी, अच्छी सेवा किया हुआ राजा, बहुत चिन्तन करके किया हुआ भाषण, बहुत विचार करके किया हुआ कर्म ये सभी दीर्घकाल व्यतीत होने पर भी अपायकर (हानिकर) नहीं होते।

जीर्णभोजिनं व्याधिर्नोपसर्पति॥ (चाणक्यसूत्र)

प्रथम किया हुआ भोजन ठीक पच जाने पर दूसरा भोजन करने वाले के पास व्याधि फटकती नहीं है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति कभी रोग ग्रस्त नहीं होते।

विद्याघातो ह्यनभ्यासः, स्त्रीणां घातः कुचैलता।
व्याधीनां भोजनं जीर्णं, शत्रोर्घातः प्रपञ्चता॥ (बृहस्पति)

अनभ्यास विद्यार्थी के लिए घातक है, मलिनवस्त्र स्त्री स्वरूप के लिए घातक, भोजन का भली भाँति पच जाना रोगोत्पत्ति के लिए घातक हैं और अपनी शक्ति का प्रदर्शन शत्रु के लिए घातक होता है।

पञ्चदशोऽध्यायः

मरुस्थल्यां यथा वृष्टिः, क्षुधार्ते भोजनं तथा।
दरिद्रे दीयते दानं सफलं पाण्डुनन्दन॥ (हितोपदेश)

हे पाण्डुनन्दन! मरुस्थल में होने वाली वृष्टि की तरह क्षुधापीड़ित के लिए भोजन और दरिद्र में (धनधान्यादि का) दान सफल होता है।

JAYPEE BROTHERS

अशनाया वै पाप्मामतिः। (ऐतरेयब्राह्मण)

क्षुधा पाप बुद्धि का कारण होती है।

षोडशोऽध्यायः

व्यसनानन्तरं सौख्यं स्वल्पमप्यधिकं भवेत्।
कषायरसमासाद्य स्वाद्वतीवाम्बु विद्यते॥ (दृष्टान्तशतक)

कषाय रस :- विपत्ति के पश्चात् मिला हुआ स्वल्प सुख भी बहुत अधिक प्रतीत होता है, जैसे कषाय रस (हरीतकी) का स्वाद लेने पश्चात् जल (नीरस होने पर भी) बहुत स्वादु लगता है।

अभ्यासेन कटुद्रव्यं भवत्यभिमतं मुने।
अन्यस्मै रोचते निम्बमन्यस्मै मधु रोचते॥ (योगवसिष्ठ)

अभ्यास :- (विद्याधारी वसिष्ठजी को कहती है) हे मुने! अभ्यास से कटु द्रव्य भी प्रिय होता है। जैसे एक को मधु वैसे (अभ्यास से) दूसरे को नीम भी रोचक लगता है।

सप्तदशोऽध्यायः

किन्तु मद्यं स्वभावेन तथैवान्नं तथा स्मृतम्।
अयुक्तियुक्तं रोगाय, युक्तियुक्तं यथाऽमृतम्॥ (चरक)

यद्यपि मद्य स्वभावतः (शरीर की दृष्टि से) अन्न के समान होती है, किन्तु अयुक्ति से सेवन करने पर वह रोगोत्पादक और युक्ति से सेवन करने पर अमृतसम मान हितकर है।

न पश्यति जन्मान्धः कामान्धो नैव पश्यति।
न पश्यति मदोन्मत्तो ह्यार्थी दोषान्न पश्यति॥ (वृद्धचाणक्य)

जन्मान्ध व्यक्ति (चर्मचक्षु न होने से जड़सृष्टि को) नहीं देखता (परन्तु गुण दोषों को देखता है), किन्तु कामान्ध, मद्यमत्त और धनलोभी (बुद्धि नष्ट होने से) सदैव दोषों को नहीं देखते। सभी गुणवान दिखाई देते हैं।

अष्टादशोऽध्यायः

कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा।
सर्वत्र मैथुनत्यागं ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते॥ (वसिष्ठसंहिता)

ब्रह्मचर्य व्याख्या :- शरीर, मन और वाणी- इन तीनों से सभी अवस्थाओं में सदा सर्वदा तथा सर्वत्र मैथुनत्याग को ब्रह्मचर्य कहते हैं। (ये शुद्ध ब्रह्मचर्य के लक्षण है)।

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च॥

JAYPEE BROTHERS

एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः।
विपरीतं ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम्॥ (दक्षस्मृति)

अष्टाङ्गब्रह्मचर्य :- विचारी पुरुष (स्त्रियों के द्वारा पुरुषों का तथा पुरुषों के द्वारा स्त्रियों का) स्मरण, गुणगान, उनके साथ क्रीड़ा करना, उनकी ओर कामुक दृष्टि से देखना, एकान्त में भाषण, मैथुन के सङ्कल्प करना, तदर्थ प्रयत्न और प्रयत्नसम्भोग-इन आठ अङ्गों को मैथुन और इनके विपरीत आठ अङ्गों को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

ऊनविंशोऽध्यायः

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
ज्ञानं हि तेषामधिको विशेषो ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः॥ (वृद्धचाणक्य)

आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये चारों प्रक्रिया मनुष्यों के समान पशुओं में भी होती हैं किन्तु ज्ञान (बुद्धि विशेष) मनुष्यों का विशेष गुण है, उसके बिना वे पशु सम होते हैं।

अर्धो हि वा एष आत्मनस्तस्माद्यज्जायां न विन्दते नैतावत्
प्रजायते असर्वो हि तावद् भवति। अथ यदैव जायां विदन्ते
प्रजायते तर्हि सर्वो भवति॥ (वाजसनेयब्राह्मण)

प्रजा के लिए विवाह :- जाया आत्मा का अर्धांश है। इसलिए जब तक वह भार्यावान् प्रजावान् नहीं होता है तब तक वह अपूर्ण है। जब वही भार्यावान् प्रजावान् होता है तब वह पूर्ण होता है।

जायापत्योर्न विभागो जायते। (आपस्तम्बधर्मसूत्र)

पति-पत्नी का विभाजन नहीं होता है।

विंशोऽध्यायः

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता, दुःखी सदा को विषयानुरागी।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी, कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः॥ (शङ्कराचार्य)

विषय-विषालुता :- विष से अधिक विषालु कौन है? सर्व विषय। सदा दुःखी कौन है जो विषयो में अनुरक्त हो धन्य कौन जो परोपकारी, पूजनीय कौन है जो शिवतत्त्व (परमात्मा) में सर्वथा निष्ठा रखने वाला।

विषस्य विषयाणां च दूरमत्यन्तमन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति, विषयाः स्मरणादपि॥ (चन्द्रगोमी)

विष और विषयों में बहुत अधिक अन्तर है, विष सेवन से और विषय केवल स्मरण करने से भी घातक होते हैं (इन्द्रियों द्वारा उनका सेवन करने की आवश्यकता नहीं होती)।



JAYREE BROTHERS

for detailed information on ayurveda books, visit our website www.jaypeebrothers.com, for detailed information on ayurveda books, visit our webs

संस्कृत परिज्ञान

द्वितीय प्रश्न-पत्र

निरूक्ति पर्याय एवं आयुर्वेद का इतिहास

संस्कृत द्वितीय प्रश्न-पत्र की विशेषता :-

- निरुत्ति एवं पर्याय पद।
- विशेष शब्दों की परिभाषा।
- वैद्यकीय सुभाषित के २० अध्यायों के प्रमुख श्लोकों का अर्थ।
- पंचतंत्र की पांच कहानियों का संक्षिप्त परिचय।
- इतिहास के समस्त बिन्दुओं का यथावश्यक वर्णन।
- आयुर्वेद की पत्र-पत्रिकाएं।
- विश्व स्वास्थ्य संघठन के कार्यों में आयुर्वेद की भूमिका।

आचार्य वैद्य ताराचन्द शर्मा, एम.डी. (आयुर्वेद), स्व. पं. रामदत्त जी शर्मा के सुपुत्र, मूल निवासी बिसाऊ, झुन्झुनू (राजस्थान) में उत्पन्न अपना प्रारंभिक अध्ययन समाप्त कर जयपुर में आयुर्वेद अध्ययन वैद्य मुरारी मिश्र जी एवं वैद्य रामकृष्ण जी ढण्ढ के सानिध्य में कर्माभ्यास करते हुए आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की, 1968 से 1978 तक जयपुर एवं हरियाणा के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कराते हुए पदार्थ विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, आयुर्वेद का इतिहास एवं द्रव्यगुण विज्ञान आदि विषयों पर पुस्तकों का लेखन किया। 1980 में पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला से एम.डी. आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर दिल्ली के मूलचन्द हॉस्पिटल में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के पद पं. हरिदत्त जी शास्त्री एवं श्री मुकुन्दीलाल जी द्विवेदी के सानिध्य में आयुर्वेद विश्वकोश तैयार किया जिसका एक भाग "पन्चकर्म चिकित्सा विज्ञान" चौखम्बा से प्रकाशित हो चुका है। 1995 में वैद्य शिवकुमार जी मिश्र, पूर्व सलाहकार आयुर्वेद, भारत सरकार के निर्देशन में संकलन कार्य पूर्ण कर मूलचन्द से निवृत्ति लेकर 1995 से मॉडल आई हॉस्पिटल, लाजपत नगर में अधीक्षक आयुर्वेद विभाग के पद पर कार्य कर रहे हैं, साथ ही स्वतंत्र चिकित्सा भी कर रहे हैं।

आपके लेख लगभग 200 अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा अनेक सेमीनारों में शोधपत्र वाचन भी किये हैं। आप दिल्ली के जाने-माने सिद्धहस्त नाड़ी चिकित्सक हैं। आपकी 35 पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी है। केन्द्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान की पाँच पुस्तकोंः वैद्य मनोरमा, अभिनव चिन्तामणि, बृहत योग तरंगिणी, रसमन्जूषा, वैद्यक संग्रह का हिन्दी अनुवाद किया है। विगत 40 वर्षों से आप आयुर्वेद छात्रों में लेखक के रूप में प्रसिद्ध व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको अनेक संस्थानों ने अनेक मानद उपाधियांः शताब्दी महर्षि, राजस्थान श्री, आयुर्वेद विश्व गौरव, आयुर्वेद महाप्रयाण प्रदान की है। वर्तमान में आप राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, दिल्ली के राष्ट्रीय गुरु एवं नि.भा.आयुर्वेद विद्यापीठ के अध्यक्ष हैं। राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा आपको लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, सरिता विहार, दिल्ली द्वारा टीचर्स-डे पर आपको सम्मान-पत्र दिया गया है एवं दिल्ली सरकार द्वारा "**वरिष्ठ नागरिक सम्मान**" से भी सम्मानित किया गया है।

Printed in India

Available at all medical bookstores
or buy online at www.jaypeebrothers.com

JAYPEE BROTHERS
Medical Publishers (P) Ltd.
EMCA House, 23/23-B, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110 002, INDIA
www.jaypeebrothers.com

Join us on facebook.com/JaypeeMedicalPublishers

ISBN 978-93-5696-274-3

9 789356 962743